REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

कृषि उत्पादन ही हमारा धन है ।

डॉ. सुभाष प्रभू राठोड
अर्थशास्त्र विभाग प्रमूख , प्रतिष्ठान महाविद्यालय, पैठण, ता.पैठण, जि.औरंगाबाद.

प्राक्कथन :-

भारतीय कृषि बहुत हद तक 'जीवन निर्वाह-उद्योग की अवस्था' थी । अर्थात अपने परिवार के लिए खाद्य सामग्री का उत्पादन हर किसान का पहला काम है । इसलिए इस काल में जनसंख्या और कृषि के कृषि के पारंपारिक सम्बन्ध में कोई विशेष अंतर नही आया है । अब हमें पता लगाना है कि क्या खेती करने वाले लोग खुद बदले है । भारतीय किसान और मजदूर आज की अपेक्षा अधिक अथवा कम कार्य कूशल थे । अपने अतिरिक्त प्रयत्न का फल किसानों को मिले । हम एक एकड जमीन को जोतने या उसमें धान रोपने अथवा एक एकड कपास की निराई करने या एक एकड गन्ने के खेत को गोडने अथवा एक एकड गेहूं की फसल काटने में उत्पादन किया जाता है । भारत में कही भागों में कृषि प्रणाली में कोई आधार दिखाई नही देता है । खेती की जमीन और खेती की जुडी ग्रामीण आबादी का अनुपान प्राय: समान है ।

भारत के कुछ भागों में खेती के बारे में उत्पादीत मालों पर अबूल फजल सिर्फ इतना बताता है कि यहां की प्रमूख फसल चावल थी और खेती करनेवालों को अन्य स्त्रोतों को ज्ञात होता है कि गन्ना यहां की मुख्य और कीमती फसल थी । यह बात आज भी उतनी ही सच है जितनी तब थी ।[1] भारत को कृषि प्रधान देश माना जाता है । इसलिए भारत में हर प्रकार का उत्पादन खेती मे होता है । आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका क्या है जानना चाहिए । कृषि क्षेत्र में उत्पादन बढता है इसको देखना चाहिए । कृषि क्षेत्र में तंत्रज्ञान मे जो बदलाव आया है । इसको देखकर करनी चाहिए । जागतिकीकरण से कृषि क्षेत्र पर जो परिणाम हुआ है इसका कथन करना चाहिए । कृषि क्षेत्र जो भी उत्पादन होता है किंमत धोरण कैसा तय किया जाता है ? कृषि उत्पादन की माँग एवं पूरवठा से भारत में अन्नसुरक्षा एवं आधुनिक कृषि में सार्वजनिक वितरण व्यवस्था इसपर दृष्टीक्षेप डालना चाहिए । भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभ्यास करना चाहिए ।

आर्थिक परिवर्तन की गति खेती है ।

प्रकृति का नियम है जो व्यक्ति, जो परीवार, जो समाज और जो देश है बदलते वक्त के कदमों से कदम मिला कर नहीं चल पाते वे पिछड जाते है । इसलिये यह जरुरी है की, समय को मनुष्य की इस प्रकृति के संदर्भ में समझा जाये । यह जाने समझे बिना स्वार्थ प्रेरित गिरोहबंदी के जरिये बहुजन समाज को गुलाम बनाने की साजिश न तो समझा जा सकता है । भारत जैसा देश में आबादी भूखमरी और दुसरी एक तिहाई आबादी गरीबी का कहर सेल रही हो, बेरोजगारी की समस्या भी सामने हो तो ऐसी स्थिती में सचाई नही हो सकती । 70 साल के योजनाबध्द विकास के बाद अगर हालत ये हों तो सोचना पडता है । मानने के लिए मजबूर होना पडता है । आर्थिक क्षेत्र में सामान्य लोगोंतक योजना लाकर खेती करनेवालो तक आती नही है । वैश्वीकरण का नाटक है, वैश्वीकरण का जो सबल राष्ट्रों द्वारा निर्बल राष्ट्रों को आर्थिक दृष्टी से गुलाम बनाने के उपक्रम के अतिरिक्त कुछ भी नही है ।[2] खेती कष्टकरी शेतकरी और मजदूरों की संपत्ती है । इसलिए 70 प्रतिशत लोगोंकी यही धन है मगर यह धन छिना जा रहा है । यह काम सरकार के माध्यमसे किया जा रहा है । यह काम सरकार के माध्यमसे किया जा रहा

है । वैश्वीकरण से आर्थिक गती के बजाए विफल होना संभव है । हमें विस्तार में जानेकी आवश्यकता नही है । केवल इतनाही ध्यान में रखना चाहिए की, साम्यवाद के पराभव के बाद यह नई आर्थिक निती से पूंजीवादी और दादागिरी यह सार्वभौमिक सत्ता में संभव नही है मगर आजादी के 70 साल के बाद दिखाई दे रहा है ।

भारत मे बढती गरीबी, रोजगार खत्म और 20 करोड 85 लाख लोग भुकबळी ग्रस्त है ।

खाजगीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण से भारत देश में बहुत बडे तादात पर लोग गरीबी रेषा के निचे आए है । भुकबळी की रेषा LPG के वजेसे खेती करनेवाले में से लाखो लोग खुदखुशी कर चूके है । खेती करनेवाले लोग बडी मुश्कील से हरितक्रान्ती निर्माण की थी । भारत कृषि प्रधान देश है । LPG की वजहसे खेती करनेवाले लोग खुदखूशी कर रहे है ।[3] एल.पी.जी. की वजहसे गरीबी वर्ग दारीद्र्य और भुकबळी से खुदखूशी तक भारत देश पोहोंच गया है । और अमीर वर्ग तेजीसे अमीर हो गया है । ताकी 1947 के पहीले जागतिक अमीरों में एकभी नही था । मगर अभी जागतिक अमीर में पहले 10 मे भारतीय है । तब उस भारत में 20 करोड 85 लाख लोग भुकबळी के कगार पर क्यों ? एल.पी.जी. के वजहसे रोजगार मिलेगा और भारत में जो गरीबी है ओ कम होगी लेकीन उलटा हो गया । गरीबी में बढती हो गयी और रोजगार कम हो गया ।

खेती, उद्योग और सहकार सामान्य लोगोंकी बहुत बडी अनामत है ।

भारत कृषि प्रधान देश है लेकीन आज भी तंत्रज्ञान का विकास होने के बाद भी बहुसंख्य लोगोंपर पारंपारीक व्यवसाय खेती मानी जाती है । खेती अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण भाग है । महाराष्ट्र मे कोल्हापूर जिल्हा केवल मात्र है की, खेती, उद्योग-धंदे और सहकार क्षेत्र सबसे आगे है । अज्ञान और दारीद्र्य से खेती करनेवाले के विरोधी है । शाहू महाराजने कहा है की, युरोप में खेती करने में भिन्नता दिखाई देती है । इसलिए वहा का उत्पादन अधिक से अधिक है । इसलिए भारत में आधुनिक ज्ञान का प्रसार करने वक्त सुधारीत खेती पध्दतीका प्रसार कीया जाना चाहिए । राजर्षी शाहू महाराजने 1912 में कोल्हापूर शहर में **'किंग एडवर्ड ॲग्रिकल्चरल इन्स्टिट्यूट'** की स्थापना कि थी ।[4] उसने खेती करने के लिए अत्याधुनिक यंत्रसामग्री, बी-बीयाणे उसमे आधुनिक पध्दती से खेती करते है, ऐसा **'खेती की प्रदर्शने'** इसके वजहसे लोगों मे उत्कृष्टता बढती जाती है ।

खेती करते वक्त शाहू महाराज नया-नया प्रयोग कीया करते थे । गन्ना, चावल और मुबलब पाणी का कैसा उपयोग किया जाता है । इसका भी नियोजन करना पडता था । और महत्वपूर्ण बात यह है । खेती उत्पादन होने के बाद उनको इसी हमीभाव दिया जाता था । इसलिए खेती करनेवाले लोग अपना महत्वपूर्ण धन है ऐसा मानने है ।

मध्यम, उद्योग और सहकार क्षेत्र भी लोगों के लिए महत्वपूर्ण है । इसलिए शाहू महाराज खेती करनेके लिए प्रशिक्षण लिया करते थे । खास तौर पर सहकार क्षेत्र में महाराष्ट्र अग्रेसर था । खेती करनेवाले को खेती के लिए अर्थसाहय्य और साधनसामग्री के लिए **"विविध कार्यकारी संस्था"** खेती के लिए पाणी का पुरवठा करने के लिए **'सहकारी उपसा जलसिंचन योजना'** खेती करनेवाले से हररोज हजारो लिटर दूध संकलन करने के लिए **'सहकारी दूध संस्था'** खेती करते वक्त कर्जा लेने के लिए **'ग्रामीण पुरवठा संस्था'** निर्माण कीया करते ।[5] मगर आज की तारीख मे यह उपलब्ध समाप्त की और है । इसका कारण करोडो लोग सिर्फ एक वक्त का खाना खाते है । और खुदखूशी करते है यह जानकार लोगोंको एवं सरकारको गंभीरतासे जानना चाहिए ।

सामान्य लोगों को सत्य इतिहास की जानकारी में बाधाएँ है ।

भारत का उज्वल भविष्य निर्माण करता है तो हमको हमारे इतिहास की जानकारी होनी चाहिए । दुसरा अगर हम इतिहास से सबक नही सिख लेने तो इतिहास हमको सबक सिखाये बगैर नही रहता-डॉ.बाबासाहब आंम्बेडकर इसलिए इतिहास से हमको सबक लेना चाहिऐ जैसे अपना इतिहास निर्माण करना चाहते है और नये इतिहास की रचना करने के लिए जिन तरीके से घटा उस तरीके को समझना होगा ।

जिन्होंने भारत का निर्माण किया, उन्होंने वह नहीं लिखा बल्कि उनको लिखने का अधिकार नही था । मगर जिन्होंने इतिहास की रचना की, और लिखा उन्होंने इतिहास का निर्माण नही किया । क्योंकी लिखने का अधिकार सिर्फ

उच्चवर्णीयों को थी ।[6] इसलिए सामान्य लोगोंको सत्य इतिहास की जानकारी नही है । क्योंकी सामान्य तौर पर मूलनिवासी बहुजनों को प्राचीन काल में से :

1) पढने / लिखने का अधिकार नही था ।
2) संपत्ती धारण करने का अधिकार नही था ।
3) सुरक्षा के लिए शस्त्र धारण करने का अधिकार नही था ।

इसलिए बहुजनोंको सत्य याने योग्य जानकारी का अभाव है । भारत के पहीली कक्षा से पोष्ट ग्रॅज्यूएट तक के अभ्यासक्रम में भी नही है । सत्य जानकारी की बाधाएँ है । इसिलिए समाज में सत्य जानकारी हर गाँव के प्रत्येक नागरीक तक पोंहचाने की जबाबदारी प्रत्येक समजदार या जानकार लोगोंकी है ।

भारत मे खाद्यान्न उत्पादन

खाद्यान उत्पादन में गेहूँ, चावल और बडे अनाजों के अतिरिक्त दालों का उत्पादन शामिल कीया जाता है ।

1) भारत का मुख्य खाद्य फसल चावल है ।[7]
2) देश मे खादान्नों का सर्वाधिक उत्पादन 2013-2014 में 265 मिलियन टन प्राप्त किया गया था ।
3) भारत में खाद्यान्नों का सर्वाधिक उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है । पंजाब और मध्य प्रदेश का इस मामले में क्रमशः दूसरा और तिसरा स्थान है ।
4) चावल का सर्वाधिक उत्पादन करने वाला राज्य पं-बंगाल है, जबकि चावल उत्पादन में पंजाब अग्रणी है ।
5) गेहूँ का सर्वांधिक उत्पादन करनेवाला राज्य उत्तर प्रदेश है, किन्तू गेहूँ की प्रति हेक्टर सर्वाधिक उत्पादकता पंजाब में है ।
6) मक्का का सर्वांधिक उत्पादन करने वाला राज्य आंन्ध्र प्रदेश (तेलंगणा सहीत) है प्रति हेक्टरीपर सर्वांधिक उत्पादकता तामिलनाडू में है ।[8]
7) सरसो का सर्वांधिक उत्पादन राजस्थान में होता है । किन्तू प्रति हेक्टर उत्पादकता गुजरात में सर्वांधिक है ।
8) मूंगफली का सर्वांधिक उत्पादन करनेवाला राज्य गुजरात है तथा प्रति हेक्टर उत्पादकता के मामले में भी गुजरात काही प्रथम स्थान है ।
9) सोयाबीन का सर्वांधिक उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है । किन्तू प्रति हेक्टर उत्पादकता आंध्रप्रदेश मे सर्वांधिक है ।
10) कपास की सर्वांधिक उत्पादकता गुजरात मे है । जबकी, प्रति हेक्टर उत्पादकता पंजाब में सर्वांधिक है ।
11) गन्ना का सर्वांधिक उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है । किन्तू प्रति हेक्टर उत्पादकता पं-बंगाल में सर्वांधिक है ।
12) चीनी के उत्पादन मे पहला स्थान महाराष्ट्र का है ।
13) विश्व में गेहूँ उत्पादन के मामले में पहले तीन राष्ट्र, क्रमशः चीन, भारत व अमेरिका है ।
14) चावल का सर्वांधिक उत्पादनक करनेवाले पहले दो राष्ट्र क्रमशः चीन व भारत है । जबकी तिसरा स्थान इंडोनेशिया का है ।

समारोप :

खेती हमारा धन जैसा संगठन भी हमारा सर्वोच्च शक्ति है । खेती करनेवाले मजूरदार वर्ग संगठीत रहना आवश्यक है । आझाद भारत में बहुजन समाज गुलाम और लाचार क्यों ? इसका कारण क्या है ? और इसका समाधान क्या है ? जो भी हमारा समाज का पढा-लिखा है याने साधन सम्पन्न है । वह आपने बारे सोच रहे है और धन संचय के बारे नें हमेशा लगा रहा है । उनको संम्पूर्ण बहूजन समाज विकास की कोई चिंता नही है । लेकीन हमारा धन संघटन है । संघटन मे यह सर्वोच्च शक्ती है । इसीलिए खेती करनेवाले मेहनती मजदूर को संघटीत होकर ही आपने उत्पादीत वस्तू को हमी भाव मिलेगा । वरना सिर्फ माँग करने से कुछ नही मिलेगा । शक्तीशाली बनने के लिए बहुजन समाज को संघटीत होना आवश्यक है ।[9] खेती में आम तौर पर उत्पादन कम होना याने सरकारी योजनाए सामान्य व्यक्ती तक नही पोहचांना इसके बारे मे बताया जाता है । खास तोर पर खेती करनेवाले को हमी भाव नही मिलता तो खेती जनसामान्य लोगोंका धन नही होगा । इसलिए संगठन ही सर्वोच्च शक्ती है ।

संदर्भ :-

1) मध्यकालीन भारत का आर्थिक इतिहास, सम्पादक : डॉ.आर.के. परुथी, प्रकाशक : अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस,

दरियागंज, नई दिल्ली-110002. प्रथम संस्करण-2009 (ISBN-81-8330-019-7) पेज क्र.52.
2) सरकार का आर्थिक विकास कार्यक्रम मूलनिवासीयों के विनाश का कार्यक्रम है, लेखक : भागीरथ, प्रकाशन : मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट, करोलबाग, नई दिल्ली-05, सन-2006, पेज क्र.7.
3) एल.पी.जी. भारताला गुलाम बनविण्याचा कार्यक्रम, लेखक: वामन मेश्राम, प्रकाशन: मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट, स्थळ-पूणे, पहिली आवृत्ती:22 मे-2011, पेज क्र.36.
4) राजर्षी शाहू छत्रपती जीवन व कार्य, लेखक: डॉ.जयसिंगराव पवार, प्रकाशक : महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधिनी-कोल्हापूर, 26 जाने-2016, (ISBN-978-81-926951-4-3) पेज क्र.172.
5) राजर्षी शाहू छत्रपती जीवन व कार्य, लेखक: डॉ.जयसिंगराव पवार, प्रकाशक : महाराष्ट्र इतिहास प्रबोधिनी-कोल्हापूर, 26 जाने-2016, (ISBN-978-81-926951-4-3) पेज क्र.178.
6) आधुनिक भारत में आजादी के दोन आंदोलने, लेखक : ओहोल डी.आर., प्रकाशन : मूलनिवासी पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंढवा, पूणे, प्रथम आवृत्ती : दिसंबर-2010, पेज क्र.11.
7) प्रतियोगिता दर्पण : समसायियिक वार्षिक-2016, (केन्द्र सरकार की साल 2015-16 की प्रमूख योजनाओं सहित) पेज क्र.210.
8) प्रतियोगिता दर्पण : समसायियिक वार्षिक-2016, (केन्द्र सरकार की साल 2015-16 की प्रमूख योजनाओं सहित) पेज क्र.211.
9) बहुजन संगठक में प्रकाशित मा.कांशीराम साहब के ऐतिहासीक भाषण खण्ड-3, लेखक : ए.आर. अकेला, प्रकाशन : आनन्द साहित्य सदन, छावणी अलीगड, प्रथम संस्करण : 3 जानेवारी-2015, पेज क्र.99.

डॉ. सुभाष प्रभू राठोड
अर्थशास्त्र विभाग प्रमूख , प्रतिष्ठान महाविद्यालय,पैठण, ता.पैठण, जि.औरंगाबाद.